



मुखर्जी आयोग में कुछ बातें - जिन पर शायद पहले कभी विस्तार से चर्चा नहीं की गई। चर्चा का विषय इस प्रकार है -

साक्ष्य का सबसे कमजोर रूप Hear-say evidence है। यह ऐसा साक्ष्य जो गवाह द्वारा व्यक्तिगत रूप से देखा या सुना न गया हो- गवाह को यह बात किसी और ने बताई है। विश्वसनीयता बहुत कम है।

जिन्होंने अगस्त 1945 से पहले नेताजी को नहीं देखा, वे अमान्य होंगे। जो लोग 1963 से कई मौकों पर भागबनजी/गुमनामी बाबा के साथ आमने-सामने संपर्क होने का दावा किया था- उनके 'ocular version' के समर्थन में विश्वसनीय दस्तावेजी सबूत उपलब्ध कराए जा सकते थे यदि भागबनजी/गुमनामी बाबा की तस्वीर लेना संभव होता और आयोग को इसकी तुलना नेताजी के स्वीकृत फोटोग्राफ के साथ करने का अवसर मिलता।



साक्ष्य एक दस्तावेज़ या बयान है जो किसी मामले के तथ्य का समर्थन करने के लिए अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के साक्ष्य होते हैं। अप्रत्यक्ष, indirect या परिस्थितिजन्य साक्ष्य 'circumstantial evidence' यह किसी मामले में किसी

तथ्य के बारे में एक मोटा अंदाज़ा देता है। वे पुख्ता सबूत नहीं हैं लेकिन मामले को सही दिशा में ले जा सकते हैं। यहां गुमनामी बाबा के भक्तों की गवाही आयोग को गुप्तारघाट की ओर ले जाने की कोशिश करती है। लेकिन पुख्ता सबूतों के अभाव में जस्टिस मनोज मुखर्जी ने गुप्तार घाट की कहानी पर विश्वास नहीं किया। फैजाबाद में नेताजी द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तुएं मिलीं, जो इस बात का प्रमाण है कि नेताजी 1985 में जीवित थे। उन लोगों के लिए कोई पुख्ता सबूत नहीं है जिन्होंने आयोग और किताब में दावा किया था कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु 1985 में हुई थी और उनके शरीर का अंतिम संस्कार गुप्तार घाट पर किया गया था। लेकिन संत सम्राट के फोटो-आयोग को इसकी तुलना नेताजी की स्वीकृत तस्वीरों से करने का मौका दिया। जिन लोगों ने मौनी बाबा उर्फ संत सम्राट को नेताजी होने का दावा किया उन लोगों ने अपने नेत्र संस्करण के अनुसार तस्वीरें प्रस्तुत कीं। जिस व्यक्ति ने नेताजी को 1945 से पहले देखा था वह एक नजर में बता सकता है मौनी बाबा नेताजी



जैसे दिखते हैं। जस्टिस मनोज मुखर्जी ने स्वयं आयोग की रिपोर्ट में लिखा है - "कर्नल ए. बी. सिंह सीडब्ल्यू-41, जो पहले आई.एन.ए. में थे और I.N.A. के दिनों से ही नेताजी को जानते थे, ने गवाही दी कि 19 फरवरी 1996 को वह सीतापुर गए और मौनी बाबा को देखा। उनके मुताबिक, वह इस बात से प्रभावित थे कि मौनी बाबा की शक्ल नेताजी से मिलती-जुलती थी।"

जस्टिस मनोज मुखर्जी का बयान: जिन्होंने अगस्त 1945 से पहले नेताजी को नहीं देखा, वे अमान्य होंगे। फिर

जिन लोगों ने 1945 से पहले नेताजी को करीब से देखा था और उनके साथ काम करने का मौका मिला था, उनकी गवाही अमान्य नहीं होगी। इसलिए फैजाबाद का अगला अध्याय सीतापुर था, यह आयोग को आगे बढ़ाने के लिए

जांच की सही दिशा थी। मौनी बाबा को नेताजी बताने वालों की दो श्रेणियां हैं- एक समूह ने 1945 से पहले नेताजी को नहीं देखा था, जबकि दूसरा ने 1945 से पहले नेताजी को अपनी आंखों से देखा और वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि मौनी बाबा की शक्ल नेताजी से मिलती थी।

न्यायमूर्ति मुखर्जी Cw-20 रघुराज सिंह राठौड़, Cw-57 श्री श्याम नारायण बिंद, सीडब्ल्यू-35 बाबा भंडारी @ शिव भगवान गवाहों के साक्ष्य को इस आधार पर अमान्य माना कि उन्होंने अगस्त 1945 से पहले नेताजी को नहीं देखा था। लेकिन सीडब्ल्यू-41, कर्नल अमर बहादुर सिंह की गवाही का क्या होगा ?

रघुराज सिंह राठौड़, श्री श्याम नारायण बिंद ने फिल्म के साथ मौनी बाबा की original फोटो आयोग को सौंपी. तस्वीरों पर न्यायमूर्ति मुखर्जी ने अपनी निजी राय दी- "

" अपने दावे के समर्थन में उनमें से दो ने मौनी बाबा की कुछ तस्वीरें पेश कीं, जिन्हें देखने से पता चलता है कि उनमें कोई समानता नहीं है जो भी नेताजी के साथ। इस श्रेणी में आने वाले गवाह हैं रघुराज सिंह राठौड़ (सीडब्ल्यू-20) और श्री श्याम नारायण बिंद (सीडब्ल्यू-57), बाबा भंडारी @ shiv भगवान (सीडब्ल्यू-35)।"

न्यायमूर्ति मुखर्जी ने एक नजर में मौनी बाबा की फोटो को देखकर अपनी निजी फैसला बता दिया- मौनी बाबा की फोटो नेताजी से मिलती नहीं है। यहां यह उल्लेख करना उचित होगा कि अगस्त 1945 से पहले जस्टिस मुखर्जी ने नेताजी को अपनी आंखों से नहीं देखा था, इसलिए मौनी बाबा की तस्वीर के बारे में उनकी राय पहली नजर में स्वतः ही निरस्त हो जाती है। फिर भी वह मौनी बाबा की फोटो नेताजी से मेल नहीं खाती है बताते हुए कर्नल अमर बहादुर सिंह की गवाही को खारिज कर दिया।- क्या इस नतीजे पर पहुंचने से पहले गवाह के रूप में बी लाल जैसे विशेषज्ञ की राय ली गई थी कि मौनी बाबा की तस्वीर नेताजी से मेल नहीं खाती है ?

मौनी बाबा की आंखों पर काला चश्मा लगा हुआ है और चेहरे पर सफेद दाढ़ी थी जो कि नेताजी के उपलब्ध फोटो के साथ असंगति का एक अवधारणा किसी



किसी को हो सकती है। इस चर्चा को गहराई से समझने के लिए यह उदाहरण यहां प्रासंगिक हो सकता है - यदि कोई आवेदन प्रक्रिया के दौरान जमा की गई आपकी तस्वीर आपकी वर्तमान उपस्थिति से मेल नहीं खाती है, तो यह संभावित रूप से

आईबीपीएस पीओ में शामिल होने के लिए दस्तावेज़ सत्यापन प्रक्रिया के दौरान समस्याएं पैदा कर सकता है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि 'verification' प्रक्रिया के दौरान किसी भी जटिलता से बचने के लिए आपकी सबमिट की गई तस्वीर आपके वर्तमान स्वरूप का सटीक प्रतिनिधित्व करती है। यदि उपस्थिति में महत्वपूर्ण अंतर हैं, तो संबंधित अधिकारियों तक पहुंचने और उन्हें स्थिति समझाने की सलाह दी जाती है, आपकी सटीक पहचान के लिए अन्य बायोमेट्रिक्स सत्यापन 'verification' भी आयोजित किए जाते हैं। परीक्षा संचालन के दौरान की गई आपकी आंखों की स्कैनिंग और फिंगर प्रिंट स्कैनिंग आपकी पहचान साबित करने में सहायक होगी।

वास्तविक चेहरे और फोटो का मिलान व्यवहार में काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है, और यहां तक कि पेशेवर रूप से प्रशिक्षित लोग भी अक्सर गलतियां कर बैठते हैं। क्या जस्टिस मनोज मुखर्जी यह निर्णय लेने के लिए पेशेवर रूप से प्रशिक्षित थे? - कि वह नेताजी की फोटो का मिलान मौनी बाबा की फोटो से कर सकें? - अन्यथा मनोज मुखर्जी गलत होंगे। मौनी बाबा की फोटो को खारिज करने से पहले हैंडराइटिंग एक्सपर्ट बी लाल जैसे एक्सपर्ट की गवाही लेना जरूरी था।

भारत में, डिजिटल तस्वीरें भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 के तहत अदालतों में साक्ष्य के रूप में स्वीकार्य हैं। हालाँकि, साक्ष्य के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए, तस्वीरों को प्रमाणित किया जाना चाहिए। डिजिटल तस्वीरों का प्रमाणीकरण कई तरीकों से किया जा सकता है, जिनमें शामिल हैं: मेटाडेटा:

डिजिटल तस्वीरों के मेटाडेटा में तस्वीर लेने के लिए उपयोग की गई तारीख, समय, स्थान और उपकरण के बारे में जानकारी होती है। इस जानकारी का उपयोग तस्वीरों को प्रमाणित करने के लिए किया जा सकता है।

Hash value: हैश वैल्यू किसी फ़ाइल का डिजिटल फ़िंगरप्रिंट है जो उस फ़ाइल के लिए अद्वितीय है। डिजिटल फोटोग्राफ के hash value की गणना करके, कोई फोटोग्राफ को प्रमाणित कर सकता है।

विशेषज्ञ की राय: डिजिटल फोरेंसिक विशेषज्ञ एक डिजिटल तस्वीर की जांच कर सकते हैं और उसकी प्रामाणिकता के बारे में राय दे सकते हैं।

जैसा कि मनोज मुखर्जी यह नहीं चाहता था लेकिन कहना पड़ा- मौनी बाबा की वर्तमान चेहरे नेताजी के **उपलब्ध तस्वीर** से अलग थी, अगर मौनी बाबा को संबंधित अधिकारियों के सामने पेश करने का अवसर देते, तो आयोग उनके बायोमेट्रिक्स का सत्यापन करके मौनी बाबा की सटीक पहचान का पता लगा सकता था। आयोग के पास उसका परीक्षण करने का अवसर आया जैसे - फिंगर प्रिंट स्कैनिंग डीएनए टेस्ट आदि। न्यायाधीश मनोज मुखर्जी अनाधिकृत रूप से मुजेहना जाकर संत सम्राट उर्फ मौनीबाबा से मिलने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा ?



न्यायमूर्ति मनोज कुमार मुखर्जी ने पुख्ता सबूत के अभाव में गुप्तार घाट की कहानी को खारिज कर दिया। स्वाभाविक तौर पर यह सवाल उठेगा कि जिस व्यक्ति का सामान फैजाबाद में मिला, वह 1985 के बाद कहां चले गए थे- यह शोध का विषय क्यों नहीं हो सकता? अगर नेताजी की फोटो से संत सम्राट उर्फ मौनी बाबा की फोटो मैच नहीं कर रही थी तो कर्नल अमर बहादुर सिंह ने आयोग में गवाही क्यों दी और जस्टिस मनोज मुखर्जी क्यों मुजेहना गए ? सीतापुर में प्रवेश करने के लिए फैजाबाद , एक प्रयोग था। साल 1972 में पहली मुलाकात में महाकाल ने कहा था, "वह वापस आएंगे

लेकिन इंसानों से उनका रिश्ता नहीं होगा. उनका रिश्ता अशरिरी से होगा. जो खुद को देने को तैयार होंगे. वह उनसे रिश्ता रखेंगे." यानी इतिहास के पन्नों में जीवित भूत से नेताजी का संबंध होगा। कुछ ऐसे सुभाष प्रेमी संत मिले जो अपना सर्वस्व अर्पित करने को तैयार थे। ये हैं बाबा भंडारी, बाबा जयगुरु देव, योगीराज गौरी शंकर अवदूत आदि।



भगवानजी के भक्त उन अशरिरी जीवित भूतों की बातचीत की वास्तविकता को स्वीकार क्यों नहीं कर पाते?- यह शोध का विषय बन गया है।



संत सम्राट उर्फ मौनीबाबा बौद्ध भिक्षु के वेश में नेहरू के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि देने दिल्ली गए थे - भंडारी बाबा के मुताबिक, तस्वीरें मेल खाती हैं। मुखर्जी आयोग में इस तथ्य को दबाने के

लिए कितने बनावटी शोधकर्ताओं की मार्केटिंग की गई। इसके पीछे सीतापुर का अध्याय मिटाने के लिए कोई अदृश्य उंगली झुकी होगी।

बाबा भंडारी ने 11 अगस्त 2001 को लखनऊ में प्रकाशित दैनिक जागरण को बताया - "मैं सन 1964 में जब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ तो मैं भी साधुवेशधारी नेताजी के साथ दिल्ली गया हुआ था। इसी यात्रा में उन्होंने पुछने पर स्पष्ट किया कि वे सुभाष चन्द्र बोस हैं। क्योंकि नेताजी बौद्ध



भिक्षु के रूप में सम्मानपूर्वक नेहरू के पार्थिव शरीर तक पहुँचे थे। यह देखकर मैं चमत्कृत रह गया था।"- बाबा भण्डारी [दैनिक जागरण लखनऊ, 11 अगस्त 2001(9) फैजाबाद।

पत्रकार अनुज धर ने भंडारी बाबा की गवाही को झूठा साबित करने के लिए वीरा धर्मवीरा को घुमा-फिराकर कब्र से बाहर निकाला। अनुज धर ने सोशल

साइट पर मांग की- मौनी बाबा उर्फ संत सम्राट पर फोकस करने की बजाय गुन्नामी बाबा पर फोकस किया जाए । 'INDIA'S BIGGEST COVER UP' किताब में अनुज धर ने लिखा है -" 383 p #6: Netaji was seen next to Panditji's bier in 1964

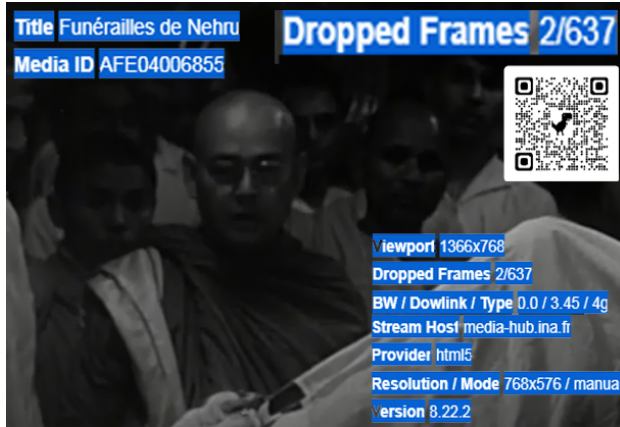
No other snippet of the Bose mystery has traversed generational gaps like the theory that "Subhas Bose" had turned up to pay respects to departed Jawaharlal Nehru in New Delhi's Teen Murti Bhavan in May 1964. Its proof lies in the picture you have just seen. But the Bose lookalike monk was not him for simple reason that he was Vira Dhammavara— a venerable Cambodian Buddhist monk who lived in south Delhi for decades before passing away in the US only a couple of years back at the grand old age of 110. Dhammavara's inadvertent doppelganger act lasted barely for a second or two on camera, but it triggered a sensation so strong that it caused commotion in India for several years. The monk was quite amused about it and he actually deposed before the Khosla Commission in person to clear the air. [23]

Dr Lokesh Chandra, an eminent art historian of our times, also appeared before the commission to testify that he had known Dhammavara ever since he was a child and the Buddhist monk was indeed "present by the side of the dead body of Pandit Jawaharlal Nehru". [24]

His likeness to Bose from a certain angle notwithstanding, Dhammavara was actually a short man. Bose, as per his family members, was close to 5ft 10in tall. Take a closer look at another still:

And if you are still not convinced, check out this montage. The two pictures on right were taken at different times from the first three and yet we can see it is Dhammavara in all.”-“1964 में नेता जी को पंडित जी की अर्थी के बगल में देखा गया था, बोस रहस्य के किसी अन्य अंश ने इस सिद्धांत की तरह पीढ़ीगत अंतराल को पार नहीं किया है कि "सुभाष बोस" मई 1964 में नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में दिवंगत जवाहरलाल नेहरू को सम्मान देने के लिए आए थे। इसका प्रमाण उस तस्वीर में निहित है जिसे आपने अभी देखा है। लेकिन बोस जैसा दिखने वाला भिक्षु वह नहीं था क्योंकि वह वीरा धम्मवरा था - एक सम्मानित कम्बोडियन बौद्ध भिक्षु जो दशकों तक दक्षिणी दिल्ली में रहा था और केवल कुछ साल पहले 110 वर्ष की उम्र में अमेरिका में निधन हो गया था। धम्मवरा की अनजाने में हमशकल हरकत कैमरे पर बमुश्किल एक या दो सेकंड तक ही टिकी रही, लेकिन इससे इतनी तीव्र सनसनी फैल गई कि कई वर्षों तक भारत में हंगामा मचा रहा। भिक्षु इस बात से काफी चकित था और स्थिति स्पष्ट करने के लिए वह वास्तव में खोसला आयोग के समक्ष व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुआ। [23] हमारे समय के प्रख्यात कला इतिहासकार डॉ. लोकेश चंद्र भी आयोग के समक्ष गवाही देने के लिए उपस्थित हुए कि वह धम्मवीरा को तब से जानते हैं जब वह एक बच्चे थे और बौद्ध भिक्षु वास्तव में "पंडित जवाहरलाल नेहरू के शव के पास मौजूद थे" . [24] एक निश्चित कोण से बोस से समानता के बावजूद, धम्मवारा वास्तव में एक छोटे कद का व्यक्ति था। उनके परिवार के सदस्यों के अनुसार, बोस की लंबाई लगभग 5 फीट 10 इंच थी। अभी भी एक और चीज़ पर करीब से नज़र डालें:

और यदि आप अभी भी आश्वस्त नहीं हैं, तो इस असेंबल को देखें। दाईं ओर की दो तस्वीरें पहले तीन से अलग-अलग समय पर ली गई थीं और फिर भी हम देख सकते हैं कि यह पूरी तरह से धम्मवर है।”



बौद्ध भिक्षु को 1964 (उन्नीस चौसठ) में भारत सरकार द्वारा बनाई गई एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म में देखा गया था। सुभाषवादी लोग ने अपने "कॉल" पेपर में साधु को नेताजी बताते हुए एक बड़ा अभियान चलाया। उस दिन इस दावे के खिलाफ कोई नज़र नहीं आया. संसद में जब प्रधानमंत्री लाल

बहादुर शास्त्री से इस बारे में पूछा गया तो वह बौद्ध भिक्षु की फोटो देखकर चुप हो गए। बौद्ध भिक्षु को लेकर देश-विदेश की मीडिया में सवाल उठे थे। जब सरकार पर सवाल उठा तो बिना कोई कारण बताए भारत सरकार द्वारा बनाई गई डॉक्यूमेंट्री फिल्म की 816-बी (आठ सौ सोलह-बी) का हिस्सा काट दिया। लेकिन लंबे समय के बाद सत्तर के दशक में इंदिरा गांधी की सरकार ने दबाव में आकर 'खोसला आयोग' का गठन किया। लेकिन जी.डी. खोसला ने फिर से नेताजी को मृत घोषित कर दिया। एक दशक बाद खोसला आयोग में, वीरा धर्मवीरा नाम के कंबोडियाई बौद्ध भिक्षु Bira Dhammavara ने दावा किया कि

तस्वीर में नेहरू के शरीर के बगल में खड़ा भिक्षु उन्हीं का था। वीरा धर्मवीरा अनुचित झूठा दावा करके बैठे हैं।



तत्कालीन आई.बी. अधिकारी बी.एन. मलिक. जिन्होंने खोसला आयोग में बिल्कुल उलट बयान दिया था - उन्होंने उस दिन नेहरू के शव के पास किसी बौद्ध भिक्षु को नहीं देखा था! लेकिन तिनमूर्ति

भवन के अंदर बी.एन.मल्लिक मल्लिक हमेशा मौजूद थे।

आई बी अधिकारी के कथन से यह कहा जा सकता है कि -

1) कंबोडियाई बौद्ध भिक्षु वीरा धर्मवीरा के दावे झूठे थे।

2) चूंकि भारत सरकार द्वारा बनाई गई डॉक्यूमेंट्री फिल्म का वह हिस्सा तत्कालीन सरकार द्वारा काट दिया गया था, इसलिए सरकार का कोई भी उच्च पदस्थ अधिकारी उस हिस्से को वापस जनता के सामने नहीं ला सकता और जैसे कि मामले को दबाने के लिए एक दशक बाद खोसला आयोग में वीरा धर्मवीरा व्यक्ति को झूठे गवाह के रूप में खड़ा कर दिया गया। इस संदर्भ में अधिकारी का बयान बहुत कुछ संकेत दे रहा है. अतः वीरा धर्मवीरा झूठा होने के कारण सम्मान के योग्य व्यक्ति नहीं हो सकते। क्योंकि डॉक्यूमेंट्री फिल्म में नेहरू के शव के दोनों ओर वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों के बराबर ऊंचाई पर खड़े संन्यासी को देखा गया, जो कद-काठी और शक्ल-सूरत में तो नेताजी से मेल खाता था, लेकिन वीरधर्मवीरा की ऊंचाई काफी छोटा था।

वीराधर्मवीरा कौन थे? नेहरू ने उस कम्बोडियन संत को दिल्ली में आश्रम बनाने के लिए ज़मीन दी। उस समय कंबोडिया में गृह-संघर्ष और युद्ध चल रहा था।

वीरा धर्मवीरा जिन्होंने अपने देश के खतरे में वह कंबोडियाई लोगों के साथ नहीं खड़े थे, ने दिल्ली में एक बौद्ध मंदिर स्थापित किया, फिर एक निवासी के रूप में अमेरिका चले गए। क्या वीरा धर्मवीरा ने नेताजी को मृत साबित करने में जो भूमिका निभाई उसके पीछे इंदिरा गांधी का परोक्ष समर्थन था? शोध की मांग करता है. साथ ही आपको यह भी सोचना होगा - क्या साधुबेसि वीराधर्मवीरा अमेरिका की सी.आई.ए. के साथ जुड़ा हुआ नहीं था? नेताजी शोधकर्ता अनुजधर ने वीराधर्मवीरा को सम्मानित व्यक्ति होने का दावा क्यों किया? यहां अनुज धर की भूमिका भी संदिग्ध है. लगभग एक दशक के बाद, खोसला आयोग में वीरा धर्मवीरा की झूठी गवाही सामने आई और मुखर्जी आयोग के बाद, अनुजधर ने अचानक वीरधर्म को एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में प्रचारित करना शुरू कर दिया - उन्होंने दावा किया कि नेहरू के शव के पास नेताजी नहीं, बल्कि वीराधर्मवीरा खड़े थे। बेंगलुरु में अनुज धर से एक वरिष्ठ नेताजी प्रेमी ने वीरा धर्मवीरा के कद के बारे में सवाल किया। अनुज ने

लड़खड़ाते और कमज़ोर जवाब से किसी तरह मामला संभाला. सवाल यह है कि अनुज धर नेहरू के बगल में वीरा धर्मवीरा को क्यों थोपना चाहते हैं? इसके पीछे उनका मुख्य उद्देश्य क्या था? प्रसंगवश, यह उल्लेख करना आवश्यक है कि मुखर्जी आयोग में एक महत्वपूर्ण गवाह थे सी-डब्ल्यू-35, बाबा भंडारी उर्फ शिव भगवान ने शपथ पत्र में कहा-नेताजी संतसम्राट उर्फ मौनीबाबा के नाम से ब्रह्म ऋषि की तरह रह रहे हैं, अगर देश को नेता जी चाहिए तो भंडारी बाबा के पते पर संपर्क करने पर संतसम्राट मिल जाएगा। उन्होंने यह भी बताया, "वर्ष 1964 में जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद मुझे संत सम्राट से पता चला कि वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस हैं क्योंकि वह जवाहरलाल नेहरू के शव पर पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए दिल्ली जाने की तैयारी कर रहे थे और वह वास्तव में वहां गए।"

भंडारी बाबा के गर्दन में यह निशान अल्फ्रेड पार्क दुर्घटना का गवाह है।



‘हम लोग रहे हैं और आज भी हैं।’

ताप्ती नदी के किनारे अग्नि प्रज्वलित करके सौगंध उठाए थे क्रान्तिकारी अगर सोबर जनम लेना पड़े भारत जननी को आजाद कराने के लिए हम लेंगे। तब एक महापुरुष आकर उन लोगों को समझाया तब जाकर वह शान्त बैठे। - बाबा भाण्डारी

क्रान्तिकारियों को कौन शांत कर सकता है? भंडारी बाबा को क्रान्तिकारियों की उस गुप्त शपथ के बारे में कैसे पता चला? - क्या वह वहां मौजूद थे?

2001 के वोटर कार्ड में भंडारी बाबा की उम्र 63 साल थी। लेकिन उस साल मुखर्जी आयोग के मुताबिक बाबा की उम्र लगभग 90 साल ! लेकिन रौद्रपुर के ग्रामीणों का दावा है कि वह सौ साल से भी अधिक है।



बाबा भंडारी ने 11 अगस्त 2001 को लखनऊ में प्रकाशित दैनिक जागरण को बताया -"मैं सन 1964 में जब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ तो मैं भी साधुवेशधारी नेताजी के साथ दिल्ली गया हुआ था। इसी यात्रा में उन्होंने पुछने पर स्पष्ट किया कि वे सुभाष चन्द्र बोस हैं। क्योंकि नेताजी बौद्ध

भिक्षु के रूप में सम्मानपूर्वक नेहरू के पार्थिव शरीर तक पहुँचे थे। यह देखकर मैं चमत्कृत रह गया था।"- बाबा भण्डारी [दैनिक जागरण लखनऊ, 11 अगस्त 2001(9) फैजाबाद।

वह भी बौद्ध भिक्षु के भेष में नेता जी के साथ वहाँ नेहरू के शव के पास मौजूद थे। पत्रकार अनुज धर ने भंडारी बाबा की गवाही को झूठा साबित करने के लिए वीरा धर्मवीरा को घुमा-फिराकर कब्र से बाहर निकाला। अनुज धर ने सोशल साइट पर मांग की- मौनी बाबा उर्फ संत सम्राट पर फोकस करने की बजाय गुन्नामी बाबा पर फोकस किया जाए, अनुज धर नेये बात भी कहीं - जो लोग बौद्ध भिक्षु के साथ-साथ मौनी बाबा को भी नेताजी सुभाष चंद्र बोस बताते हैं, वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं। लेकिन बाबा भंडारी को झूठ साबित करने के लिए अनुज धर को सौ बार सोचना है, क्योंकि मुखर्जी कमीशन के गवाह CW-41 यानी आजाद हिंद फौज के कर्नल अमर बहादुर सिंह का दावा है- वे उन्नीस सौ छियानवे में मुजेहना गए थे और एक मौनी बाबा से मुलाकात की . मौनी बाबा की शकल से नेताजी की शकल देखकर वह हैरान रह गए।

/-नीलिमा देव, M.A. [दर्शनशास्त्र]

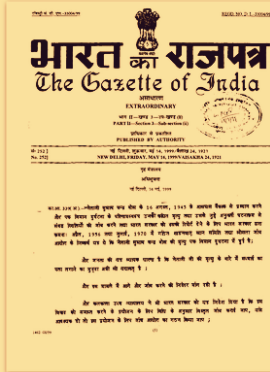
टिप्पणी - मूल पाठ का बांग्ला से अनुवाद किया गया है।

NOTE -

[IBPS is responsible for engaging in unique stages of the selection procedure of distinguished staff throughout the country by keeping transparency, carrying out online examinations, and screening candidate's responses in a timely manner. IBPS offers its services to all companies like NABARD, SBI, RBI, SIDBI, Associate banks, etc. आईबीपीएस देश भर में प्रतिष्ठित कर्मचारियों की चयन प्रक्रिया के अनूठे चरणों में पारदर्शिता बनाए रखने, ऑनलाइन परीक्षाएं आयोजित करने और समय पर उम्मीदवार की प्रतिक्रियाओं की जांच करने के लिए जिम्मेदार है। IBPS - नाबार्ड, एसबीआई, आरबीआई, सिडबी, एसोसिएट बैंकों आदि जैसी सभी कंपनियों को अपनी सेवाएं प्रदान करता है।]

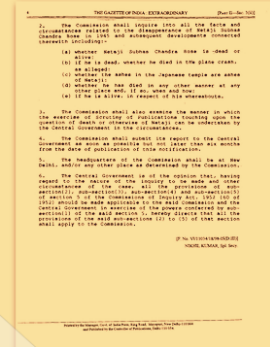
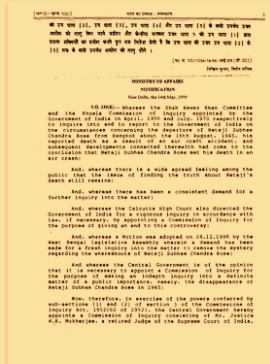
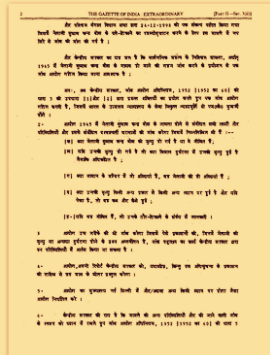
मुखर्जी आयोग के उद्देश्य नीचे दिये गये हैं -

মুখার্জি কমিশন গঠনের উদ্দেশ্য নিম্নে তুলে ধরা হল -



आयोग 1945 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के लापता होने से संबंधित सभी तथ्यों और परिस्थितियों और इससे संबंधित पश्चात्कर्ती घटनाओं की जांच करेगा जिसमें निम्नलिखित भी है;

- 1) क्या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई है या वे जीवित है;
- 2) यदि उनकी मृत्यु हो गई है तो क्या विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई है जैसा कि अधिकथित है;
- 3) क्या जापान के मन्दिर में जो अस्तियां हैं, वह नेताजी की ही अस्तियां हैं;
- 4) क्या उनकी मृत्यु किसी अन्य प्रकार से किसी अन्य स्थान पर हुई है और यदि ऐसा है, तो वह कब और कैसे हुई;
- 5) यदि वह जीवित हैं, तो उनके ठौर-ठिकाने के संबंध में जानकारी।



(a) Whether Netaji Subhas Chandra Bose is - dead or alive ; (b) if he is dead, Whether he died in the plane crash , as alleged; (c) Whether the ashes in the Japanese temple are ashes of Netaji; (d) Whether he has died in any other manner at any other place and , if so, when and how; (e) if he is alive, in respect of his whereabouts .

কমিশন ১৯৪৫ সালে নেতাজি সুভাষ চন্দ্র বসুর অন্তর্ধান এবং এর সাথে সম্পর্কিত পরবর্তী ঘটনাগুলির সাথে সম্পর্কিত সমস্ত ঘটনা এবং পরিস্থিতি তদন্ত করবে, যার মধ্যে নিম্নলিখিতগুলি রয়েছে;

- ১) নেতাজি সুভাষ চন্দ্র বসু কি মৃত নাকি জীবিত?
- ২) যদি তিনি মারা যান, তবে অভিযোগ অনুযায়ী তিনি বিমান দুর্ঘটনায় মারা গেছেন কিনা;
- ৩) জাপানের মন্দিরের ছাই কি নেতাজির ছাই?
- ৪) তিনি অন্য কোন স্থানে অন্য কোন উপায়ে মারা গেছেন কিনা এবং যদি তাই হয়, কখন এবং কিভাবে তা ঘটেছে;
- ৫) তিনি জীবিত থাকলে তার অবস্থান সম্পর্কিত তথ্য।

"পুনরাগমনায় চ"

"দুই তিন জন ঘাঁরা আছেন তাঁদের আসবার পথ যদি সুগম করতে পারি,সেই পথ সহজ করার জন্য ফেঁসেছি। আমারই ঘরের পালিত ছেলে মীরজাফরের ভূমিকা নিয়েছে।...সেই ব্যক্তিকে আনবার চেষ্টা করেছিলাম। সংগঠন করেছিলাম, **man bridge** (ম্যান ব্রিজ) তৈরী করেছিলাম। সেই ব্যক্তি এলে বুঝতে পারতাম তিনি নেতাজী কিনা।"

-জন্ম সিদ্ধ ঠাকুর শ্রীশ্রী বালক ব্রহ্মচারী মহারাজ।
[সুভাষ উদ্যান বজ বজ,১৮-১০-৬৪]



ফিরে সে আসবে কিন্তু মানুষের সঙ্গে তার কোনও সম্পর্ক থাকবে না।
তার সম্পর্ক অশরীরীদের সঙ্গে।

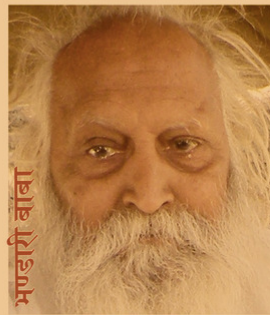
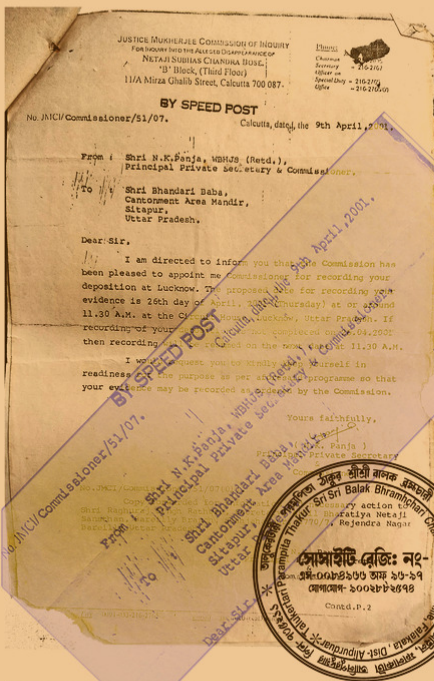
ঐ মহামানব আসে পুস্তকে "পুনরাগমনায় চ" শীর্ষকে মহাকালের বক্তব্য চারণ উল্লেখ করে জানিয়েছিলেন - " অতীতের মানুষ হলেও এ এক নতুন মানুষ। ' **Acomplete break with the past**', অথচ মানুষটি সংশয়াতীত সত্য। যে গর্জন একবার শুনেছি তা ভোলার নয়- **'I have cheated death so often, I have been cheating death in every day of my survival. What have you done?'** সব ঢং - 'ফিরে এসো'। ফিরে সে আসবে কিন্তু মানুষের সঙ্গে তার কোনও সম্পর্ক থাকবে না। তার সম্পর্ক অশরীরীদের সঙ্গে। যারা নিজেকে দিতে তৈরী থাকবে তাদের সঙ্গেই তার সম্পর্ক থাকবে। **Others will be left behind.**

[ঐ মহামানব আসেঃ পৃ- ১১২-১১৩ আদিপর্ব]

भण्डारी बाबा ने किया नेताजी के जीवित होने का दावा। 'मौनी बाबा के रूप में नेताजी अभी जिन्दा हैं'

दैनिक जागरण लखनऊ, 11 अगस्त 2001(9) फैजाबाद

-मुखर्जी आयोग के गवाह भण्डारी बाबा से मुलाकात -



भण्डारी बाबा

‘मैं सन 1664 में जब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हुआ तो मैं भी साधुवेशधारी नेताजी के साथ दिल्ली गया हुआ था। इसी यात्रा में उन्होंने पुछने पर स्पष्ट किया कि वे सुभाष चन्द्र बोस हैं। क्योंकि नेताजी बौद्ध भिक्षु के रूप में सम्मानपूर्वक नेहरू के पार्थिव शरीर तक पहुँचे थे। यह देखकर मैं चमत्कृत रह गया था’...नेताजी की पहचान छूपाये रखने और देश विदेश में उनके अभियान में लगे कुल 16 रुपी तैयार किये गये थे। इनमें से 11 सुभाष जीवित है और पांच मर गये। असली सुभाष सीतापुर के मौनी बाबा ही है। मैं किसी को भी नेताजी से मिला सकता हूँ।’ -भण्डारी बाबा [2001]

दैनिक जागरण लखनऊ, 11 अगस्त 2001(9) फैजाबाद



नेहरूवर शवमेहेर पाएँ गन्नासीहि कि तसखन्द मान
- खनि परबडीकाले प्यासिमान शराहिलेन ?
क्या नेहरू के शव के पास भिक्षु Tashkent
man है - जो बाद में Paris man बन गया?

